क्या विज्ञान पुरुषवादी है?

अरुणा दत्तात्रेयन

अमरीका में साइन्स एजूकेशन नामक पत्रिका में बीसवीं सदी में प्रकाशित लेखों में वैज्ञानिकों से स्पष्ट आह्वान किया जाता था कि वे जानबूझकर अपने सारे जज़्बातों और इच्छाओं से मुक्ति पाएं और सर्द ढंग से सोचें, अवैयक्तिक रहें, भावनाओं से ऊपर रहें। यदि हम भावनाओं, पालन-पोषण, सहयोग और सहज बोध (इन्ट्यूशन) के गुणों को स्त्री सुलभ मान लें तो क्या इसका अर्थ यह है कि हमें मानवता के, इस विश्व के और अपने अस्तित्व के स्त्री सुलभ पक्ष को महत्व नहीं देना चाहिए?

मेरे बेटे और शायद उसके जैसे कई बच्चों का प्रिय कार्टून पात्र आजकल 'डेक्स्टर लैबोरेटरी' वाला डेक्स्टर है। इस कार्टून फिल्म में डेक्स्टर के पास अपने तहखाने में एक गुप्त प्रयोगशाला है जहां वह रोबोट बनाता है, अंतरिक्ष के दैत्यों से युद्ध करता है, जिनेटिक इंजीनियरिंग का काम करता है और मानव जाति की भलाई के लिए गुप्त फार्मूले लिखने में भिड़ा रहता है।

दूसरी ओर उसकी बहन डीडी को कभी बैले की रियाज़ करते हुए तो कभी लड़की सुलभ अन्य काम जैसे सजना-संवरना, प्रसिद्धि के सपने देखना, डेक्स्टर को परेशान करना और कभी-कभी उसके प्रयोगों को तबाह कर देना जैसे काम करते दिखाया जाता है।

मैंने डीडी की इस लापरवाह छवि के बारे में सोचा। उसकी विज्ञान में कोई रुचि नहीं है। मैंने सोचा कि क्या यह छवि हकीकत से मेल खाती है और क्यों बच्चे स्त्रियों और विज्ञान की ऐसी छवि को मंजूर करते हैं।

कुछ वर्ष पहले इंग्लैण्ड के स्कूली बच्चों का एक सर्वेक्षण किया गया था। सर्वेक्षण में यह जानने का प्रयास किया था कि ये बच्चे एक व्यवसाय के नाते विज्ञान को किस रूप में देखते हैं और उनके दिमाग में वैज्ञानिकों की क्या छवि है। सर्वेक्षण से पता चला था कि लगभग 85 प्रतिशत बच्चे वैज्ञानिकों को एक खोए-खोए से पुरुष प्रोफेसर के रूप में देखते हैं जो गन्दा-सा प्रयोगशाला कोट पहनता है। या फिर उनके दिमाग में ब्लबर फिल्म के रॉबिन विलियम्स जैसे किसी सनकी का ख्याल आता है। यहां तक कि अधिकांश छात्राओं ने भी वैज्ञानिक की भूमिका में पुरुष को ही रखा था और कुछेक ने ही पढ़ाकू लड़कियों को वैज्ञानिक की भूमिका में देखा था।

सत्रहवीं सदी में स्थापित हुई लन्दन की रॉयल सोसाइटी के चार्टर में सोसाइटी का काम एक मर्दाना दर्शन का सूत्रपात करना बताया गया था। अरस्तू ने स्त्रीपन को 'एक विरूपता, एक अपंगता' की संज्ञा दी थी। इन्हीं जुम्लों का उपयोग उन्होंने ब्रह्माण्ड के विवरण में भी किया था। यहां उन्होंने शाश्वत अजेय स्वर्ग को तो पुरुष और सतत् परिवर्तनशील धरती को स्त्री माना था।

अमरीका में साइन्स एजूकेशन नामक पत्रिका में बीसवीं सदी में प्रकाशित लेखों में वैज्ञानिकों से स्पष्ट आह्वान किया जाता था कि वे जानबूझकर अपने सारे जज़्बातों और इच्छाओं से मुक्ति पाएं और सर्द ढंग से सोचें, अवैयक्तिक रहें, भावनाओं से ऊपर रहें। यदि हम भावनाओं, पालन-पोषण, सहयोग और सहज बोध (इन्ट्यूशन) के गुणों को स्त्री सुलभ मान लें तो क्या इसका अर्थ यह है कि हमें मानवता के, इस विश्व के और अपने अस्तित्व के स्त्री